महाराज्ञीसहस्रनामावली

महाराज्ञीसहस्रनामावली

प्रकाशक :–

प्रेमनाथ शास्त्री

मूल्य : 15 रु०

लक्ष्मी प्रिंटिंग वर्कस
लाल कुआं, देहली-6

पुष्पार्चन

इष्टदेव को सन्तुष्ट करने, मानसिक शान्ति, तथा हर मनोकामना सिद्धि के लिए पुष्पार्चन एक सरल तथा सुगम मार्ग है, हम जब भी चाहें- हर एक व्रत महोत्सव, पर्व अथवा जन्म दिन आदि पर जब हम कोई महान् यज्ञ करने में असमर्थ हूँ तो अवश्य पुष्पार्चन रूपी यज्ञ का प्रोग्राम बनायें।

विष्णु भगवान् ने शंकर भगवान् को सन्तुष्ट कराने के लिए **"सहस्त्रपुष्पार्चन्"** किया परन्तु अन्त में हजार पुष्प में एक कम होने पर भक्ति के आवेश में अपना नेत्रकमल हजारवें पुष्प के रूप में अर्पण किया, जिस के फलस्वरूप विष्णु को भगवान् शंकर से सुदर्शनचक्र प्राप्त हुआ।

पुष्पदन्ताचार्य ने फूल न मिलने पर फूलों के स्थान पर अपने 32 दांत पुष्पार्चन के रूप में अर्पण करते हुये महिम्नस्तोत्र के 32 श्लोकों का उच्चारण किया, भगवद्गीता में भगवान् कहते हैं **"पत्रं पुष्पं फलं तोयं"** इन प्रमाणों से स्पष्ट है पुष्पार्चन का पूजा विधान भारतीय पूजा क्रम में प्राचीन काल से प्रचलित है।

सस्त्रपुष्पार्चन विधिः-

इस पूजा में इष्ट देवता के सहस्त्रनाम के साथ आरम्भ में **"ॐ"** और अन्त में **"नमः"** जोड़कर एक-एक नाम से इष्टदेव पर पुष्प चढ़ाया जाता है, इस पूजा के लिये पुष्प पर्याप्तमात्रा में होने चाहिये (पुष्प की पत्तियाँ अलग अलग करके पूजा में प्रयोग न करें, फूल ख़ण्डित ना हो) पुष्पार्चन के लिये किसी कमरे में स्वच्छ आसन बिछायें, जहाँ सभी भक्तजन सामूहिक रूप से पूजा में सम्मिलित हो सकें, जो पूजा का मुख्यकर्त्ता अथवा यजमान होगा उसको चाहिये पद्मासन में बैठकर अपने सामने इष्टदेव की मूर्ति उस ढंग से रखे ताकि आप को फूल अर्पण करने में कोई रुकावट न पड़े पूजा के आरम्भ पर रत्नदीप तथा धूप आदि जलाकर इष्टदेव की मूर्ति को तिलक लगाकर फूलों की मालाओं से सजाइये, पहले आप (यजमान) धूपदीप करे जो इसी पुस्तक में अलग दर्ज है, पूजा में सम्मिलित होने वालों में से जो सहस्त्रनामावली का उच्चारण कर सके एक एक नाम के

आरम्भ में "ॐ" और अन्त में "नमः" जोड़कर इष्टदेवता पर फूल चढ़ायें जैसे **ॐ महाविद्यायैः नमः, ॐ जगत् मात्रेः नमः "ॐ नारायणाय नमः" ॐ शिवाय नमः"** जो भक्तजन पूजा में सम्मिलित होंगे वे भी हरनाम के साथ **"नमः"** का सामूहिक रूप से उच्चारण किया करें। **यज्ञ में स्वाहा,** पुष्पार्चन में **नमः** का प्रयोग होता है।

हर 100 वीं पुष्पांजलि अर्पण करने के समय इष्टदेव का वैदिक मन्त्र अवश्य पढें जो इसी पुस्तक में दर्ज है।

हजारवीं पुष्पाँजलि डालते समय सभी भक्त खड़े होकर वैदिकमन्त्र और इष्टदेव का कोई श्लोक पढ़कर अन्तिम पुष्पांजलि श्रद्धा से अर्पण करके तर्पण करें–जैसा कि पूजाविधि में दर्ज है आरती आदि करके प्रप्युन करके प्रसाद बाटें।

धूपदीप विधिः

पूजा के लिये रखे गये निर्माल्य के पात्र में जल की धारा डालते हुये पढें :–

ॐ अस्य श्री-आसन-शोधन-मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ-ऋषिः सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता-आसन-शोधने विनियोगः।

पृथ्वी माता को नमस्कार करते हुए पढें :–**पृथ्विी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्।**

आसन के रूप में पृथ्वी माता को दर्भ अथवा फूल अर्पण करते हुये पढें :–

ध्रुवा द्यौर्-ध्रुवा-पृथ्वी, ध्रवासः पर्वता इमे। ध्रुवं व्रिश्वम्-इदं जगत् ध्रुवो राजा विशाम्-असि। तिलक-फूल-अर्घ्य चढाते हुये पढें :–

प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः। नमस्कार करते हुए पढें :– **शुक्लाम्बरधंर विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न-वदनं ध्याये सर्व-विघ्नोप-शान्तये। अभि-प्रीतार्थ-सिद्धचर्थं पूजितो यः सैरैर्-अपि। सर्व विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधि-पतये नमः।**

गुरुः-ब्रह्मा, गुरुः-विष्णुः गुरुः-साक्षात्-महेश्वरः। गुरुर्-एव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरु-वे नमः।। ॐ गुरवे नमः, परम गुरवे

नमः, पर-मेष्ठिने गुरवे नमः, परमा-चार्याय नमः आदि सिद्धिभ्यो नमः

अंग न्यास-कीजिये अंगन्यास करके चारों दिशाओं की ओर तिल फँकते हुये पढें:-

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता, ये भूता विघ्नकर्तारः-ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

प्राणायाम कीजिये, प्राणायाम करके मुँह और पैरों को छिडकते हुये पढें :-

तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव समानानां भवति मानः, शंस्योर्-अर-रुषो धूर्तिः प्राणङ्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका अंगुली के ऊपर वाले पर्व पर पवित्र-धारण करते हुये पढें :-

वसोः पवित्रम्-असि शतधांर वसूनां पवित्रम्-असि, सहस्त्र-धारम्-अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः। जंग चावल आदि लाकर तिलक करना

अपने आपको तिलक अक्षत धूप चढ़ाते हुये पढें :-

परमात्मने पुरु-षोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आधार-शक्त्यै समाल-भनं गन्धो नमः-अर्घो नमः पुष्पं नमः।

चोंग (धीप) को तिलक अक्षत फूल चढाते हुये पढें :-

"स्वप्रकाशो-महादीपः सर्वत-स्तिमिरा-पहः। प्रसीद नम गोविन्द दीपोयं प्रतिकल्पितः। भो दीप देव-रूवपस्त्वं कर्म-समाप्तिः याक्त् स्यात्-तावत् त्वं स्थिरो भव।

सूर्यदिवता के निमित्त निर्माल्यपात्र में तिलक अक्षत फूल डालते हुये पढें :-

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः-भ्रतापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः-तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय आधार-शक्त्यै दीप-धूप-संकल्पात्-सिद्धिर-अस्तु दीपो नमः धूपो नमः। ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्यतावत्-तिथौ-अद्य .... मासस्य ..... पक्षस्य तिथौ ..... वासरे दीपोनमः धूपोनमः।

श्री महाराज्ञी सहस्त्रनाम

स्वाहाकार पूजा विधि

महाराज्ञी भगवती का ध्यान करके फूल अर्पण करते हुये पढ़ें :-

श्रीदेवी। भगवन्-वेद-तत्त्वज्ञ तन्त्रमन्त्र-विचक्षण। शरण्य सर्वलोकेश शरणागत-वत्सल।। कथं श्रियम्-अवाप्नोति लोके दारिद्र्यदुःखभाक्। मान्त्रिको भैरवेशान तन्मे गदितुम-अर्हसि।। श्रीभैरव। या देवी निष्कला राज्ञी, भगवत्यमलेश्वरी। सा सृजति-अवति व्यक्तं, संहरिष्यति तामसी।। तस्या नामसहस्त्रं ते, वक्ष्ये स्नेहेन पार्वति। अवाच्यं दुर्लभं लोके, दुः.खदारिद्र्यनाशनम्।। परमार्थप्रदं पुण्यं-परमैश्वर्य कारणम्। सर्वागम-रहस्याढच्यं सकलार्थ प्रदीपकम्। समस्तशोक शमनं महापातक-नाशनम्। सर्वमन्त्रमयं दिव्यं राज्ञीनाम सहस्त्रकम्।

अंगन्यास कीजिये-**अस्य श्री भगवती राज्ञीनाम सहस्त्रस्य, ब्रह्मा ऋषिः गायत्रं छन्दः, श्री भूतेश्वरी राज्ञी देवता, ह्रीं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं आत्मनो वाङमनः कायोपार्जित-पापनिवारणार्थं महाराज्ञी प्रसाद सिद्ध्यार्थं पाठ-होमे वा विनियोगः "ॐ ह्रां रां"** से प्राणायाम कीजिये। **ध्यानं उद्यत्-दिवाकर-सहस्त्र-रुचिं नित्रेत्रां, सिंहासनोपरि-गताम्-उरगोपवीताम्। खड्गाम्बुजाढच्य-कलशामृतपात्र-हस्तां राज्ञीं भजामि विकसत्-वद्नार-विन्दाम्।।** राज्ञाभगवती का मूलमंत्र-**"ॐ ह्रां रां"**

अग्नि में तीन आहुति ढालें :-**ॐ राज्य प्रदायै, विद्महे स्वाहा, पंच दशा**

क्षर्यै धीमहि स्वाहा तन्नो राज्ञी प्रचोदयात् स्वाहा। ॐ राज्य प्रदायै विद्महे पंचदशाक्षर्यै धीमहि स्वाहा, तन्नो राज्ञी प्रचोदयात् स्वाहा, ॐ राज्य पदायै विद्महे पंचादशाक्षर्यै धीमहि तन्नो राज्ञी प्रचोदयात् स्वाहा। मूल मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं रां क्लीं सांः भगवत्यै राज्ञयै ह्रीं स्वाहा सहस्रनाम, होम में स्वाहा पढिये–पुष्पार्चन में "नमः पढिये, हर एक सौ नाम आरम्भ करने से पहले पंचस्तवी का एक एक श्लोक अथवा (सर्व मंगल मंगल्ये) पढ कर फूल अर्पण करें–इस स्वाहाकार में 999 नाम पढ़ने से पहले कोई देवी का श्लोक पढ कर पूर्णाहुति कीजिये–स्वाहाकार हो अथवा पुष्पार्चन

फूल चढ़ाते हुये पढ़ते जायें–इतीदं मन्त्र सर्वस्वं राज्ञीनाम सहस्त्रकम्। पञ्चादशक्षरीतत्त्वं मुनिप्रियं। सर्वतत्त्वमयं पुण्यं महापातक-नाशनम् सर्वसिद्धिप्रद्धं लोके सर्वरोग-निबर्हणम्। या पठेत् परमाभक्त्या राज्ञीनाम-सहस्त्रकाम् स सद्यो मुच्यते घोरात् महापातक जात् भयात्। इति नाम सहस्त्रं तु राइयाः शिवमुखोत्-गतम्। अत्यन्त दुर्लभं गोप्यं न देयं यस्य कस्यचित्।। तर्पण कीजिये–अनेन राज्ञीनाम सहस्त्रेण ॐ ह्रीं भूतेश्वरीश्वरी महाराज्ञी भगवती प्रीयतां प्रीतास्तु।

अथ स्तुतिः

आनन्दसुन्दरपुरन्दरमुक्तमाल्यं मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जुमञ्जीरशिञ्जितमनोहरमम्बिकायाः।। 1 ।।
सौन्दर्यविभ्र-मभुवो भुवनाधिपत्यसम्पत्तिकल्पतरवस्त्रिपुरे ! जयन्ति।
एते कवित्वकुमुदप्रकरावबोधपूर्णेन्दवस्त्वयि जगज्जननि प्रमाणाः।। 2 ।।
देवि स्तुतिव्यतिकरे कृतबुद्धयस्ते वाचस्पतिप्रभृतयोपि जडीभवन्ति।
तस्मान्निसर्गजडिमा कतमोऽहमत्र स्तोत्रं तव त्रिपुरतापनपत्नि ! कर्तुम्।। 3 ।।

मातस्तथापि भवतीं भवती-व्रतापविच्छित्तये स्तुतिमहार्णवकर्णधारः।

स्तोतुं भवानि स भवच्चरणारविन्दभक्तिग्रहः किमपि मां मुखरीकरोति।। 4 ।

सूते जगन्ति भवती भवती बिभर्ति जागर्ति तत्क्षयकृते भवती भवानि।

मोहं भिनत्ति भवती रुणाद्धि लालायित जयतिं चित्रमिदं भक्त्याः।। 5।।

यस्मिन्मनागऽपि नवाम्बुजपत्रगौरि ! गौरि ! प्रसादमधुरां दृशमाऽदधासि।

तस्मिन्निरन्तरमऽनङ्गशरावकीर्ण-सीमन्तिनीनयनसन्ततयः पतन्ति।। 6 ।।

पृथ्वीभुजोऽप्युदनप्रवरस्य तस्य विद्याधरप्रणतिचुम्बितपादपीठः।

यच्चक्रवर्तिपद-वीप्रणयः स एष त्वत्पादपङ्कजरजःकणजः प्रसादः।। 7 ।।

कल्पद्रुमप्रसवकल्पितचित्रपूजामुद्दीपितप्रियतमामदरक्तगीतिम्।

नित्यं भवानि भवतीमुपवीणयन्ति विद्याधराः कनकशैलगुहागृहेषु।। 8 ।।

लक्ष्मीवशीकरणकर्मणि कामिनीनामाऽकर्षणव्य-तिकरेषु च सिद्धमन्त्रः।

निरन्ध्रमोहतिमिरच्छिदुरप्रदीपो देवि ! त्वदऽङ्घ्रिजनितो जयति प्रसादः।। 9 ।।

देवि त्वदऽङ्घ्रिनखर-त्नभुवो मयूखाः प्रत्यग्रमौक्तिकरुचो मुदमुद्वहन्ति।

सेवानतिव्य-तिकरे सुरसुन्दरीणां सीमन्तसीम्नि कुसुमस्तवकायितं यैः।। 10 ।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः



ॐ ह्रीं श्रीं रां महाराज्ञ्यै स्वाहा

ॐ क्लीं सौः पञ्चादशाक्षर्यैं ह्रीं स्वाहा

ॐ त्र्यक्षरी विद्यायै स्वाहा

ॐ परा भगवत्यै स्वाहा

ॐ विभायै स्वाहा

ॐ भास्वत्यै स्वाहा

ॐ भद्रिकायै स्वाहा

ॐ भीमायै स्वाहा

ॐ भर्ग रूपायै स्वाहा

ॐ महस्विन्यै स्वाहा

ॐ माननीयायै स्वाहा

ॐ मनीषायै स्वाहा

ॐ मनोजायै स्वाहा

ॐ मनोजवायै स्वाहा

ॐ मानदायै स्वाहा

ॐ मन्त्रविद्यायै स्वाहा

ॐ महाविद्यायै स्वाहा

ॐ षडक्षर्यै स्वाहा

ॐ षट्कूटायै स्वाहा

ॐ त्रिकूटायै स्वाहा

ॐ त्रय्यै स्वाहा

ॐ वेदत्रय्यै स्वाहा

ॐ शिवायै स्वाहा

ॐ शिवाकारायै स्वाहा

ॐ विरूपाक्ष्यै स्वाहा

ॐ शशिखण्डावतंसिन्यै स्वाहा

ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा

ॐ महोरस्कायै स्वाहा

ॐ महौजस्कायै स्वाहा

ॐ महोदयायै स्वाहा

ॐ मातङ्ग्यै स्वाहा

ॐ मोदकाहारायै स्वाहा

ॐ मदिरारुणलोचनायै स्वाहा

ॐ साध्व्यै स्वाहा

ॐ शीलवत्यै स्वाहा

ॐ शालायै स्वाहा

ॐ सुधाकलशधारिण्यै स्वाहा

ॐ खड्गिन्यै स्वाहा

ॐ पद्मिन्यै स्वाहा

ॐ पद्मायै स्वाहा

ॐ पद्मकिञ्जल्करञ्जितायै

स्वाहा

ॐ हृत्पद्मवासिन्यै स्वाहा

ॐ हृद्यायै स्वाहा

ॐ पानपात्रधरायै स्वाहा

ॐ धरायै स्वाहा

ॐ धराधरेन्द्रतनयायै स्वाहा

ॐ दक्षिणायै स्वाहा

ॐ दक्षजायै स्वाहा

ॐ दयायै स्वाहा

ॐ दयावत्यै स्वाहा

ॐ महामेधायै स्वाहा

ॐ मेदिन्यै स्वाहा

ॐ बोधिन्यै स्वाहा

ॐ गदायै स्वाहा

ॐ गदाधरार्चितायै स्वाहा

ॐ गोधायै स्वाहा

ॐ गङ्गायै स्वाहा

ॐ गोदावर्यै स्वाहा

ॐ गयायै स्वाहा

ॐ महाप्रभाव-
सहितायै स्वाहा

ॐ महोरग-
विभूषणायै स्वाहा

ॐ महामुनिकृता-
तिथ्यायै स्वाहा

ॐ माध्व्यै स्वाहा

ॐ मानवत्यै स्वाहा

ॐ मघायै स्वाहा

ॐ बालायै स्वाहा

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा

ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा

ॐ दुर्गायै स्वाहा

ॐ दुर्गतिनाशिन्यै स्वाहा

ॐ शार्यै स्वाहा

ॐ शरीरमध्यस्थायै स्वाहा

ॐ वैखर्यै स्वाहा

ॐ खेचरीश्वर्यै स्वाहा

ॐ शिवदायै स्वाहा

ॐ शिवक्षःस्थायै स्वाहा

ॐ कालिकायै स्वाहा

ॐ त्रिपुरायै स्वाहा

ॐ पुर्यै स्वाहा

ॐ पुरारिकुक्षि-
मध्यस्थायै स्वाहा

ॐ मुरारिहृदयेश्वर्यै स्वाहा

ॐ बलारिराज्यदायै स्वाहा

ॐ चण्डयै स्वाहा

ॐ चामुण्डायै स्वाहा

ॐ मुण्डधारिण्यै स्वाहा

ॐ मुण्डमालाञ्चितायै स्वाहा

ॐ मुद्रायै स्वाहा

ॐ क्षोभदायै स्वाहा

ॐ कर्षणाक्षमायै स्वाहा

ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा

ॐ नारायणीदेव्यै स्वाहा

ॐ कौमार्यै स्वाहा

ॐ अपराजितायै स्वाहा

ॐ रुद्राण्यै स्वाहा

ॐ शच्यै स्वाहा

ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा

ॐ वाराह्यै स्वाहा

ॐ वीरसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ नारसिंह्यै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ भैरवेश्यै स्वाहा[१००]

ॐ भैरवाकारभीषणायै स्वाहा

ॐ नागालङ्कारशोभा-
ढ्यायै स्वाहा

ॐ नागयज्ञोपवीतिन्यै स्वाहा

ॐ नागकङ्कणकेयूरायै स्वाहा

ॐ नागहारायै स्वाहा

ॐ सुरेश्वर्यै स्वाहा

ॐ सुरारिघातिन्यै स्वाहा

ॐ पूतायै स्वाहा

ॐ पूतनायै स्वाहा

ॐ डाकिन्यैक्रियायै स्वाहा

ॐ क्रियावत्यै स्वाहा

ॐ कुर्यै स्वाहा

ॐ कृत्यायै स्वाहा

ॐ शाकिन्यै स्वाहा

ॐ हाकिन्यै स्वाहा

ॐ लयायै स्वाहा

ॐ लीलावत्यै स्वाहा

ॐ रसाकीर्णायै स्वाहा

ॐ नागकन्यायै स्वाहा

ॐ मनोहरायै स्वाहा

ॐ हारकङ्कणशोभा-
ढ्यायै स्वाहा

ॐ सदानन्दायै स्वाहा

ॐ शुभङ्कर्यै स्वाहा

ॐ प्रहासिन्यै स्वाहा

ॐ मधुमत्यै स्वाहा

ॐ स्मरश्रियै स्वाहा

ॐ स्मरमोहिन्यै स्वाहा

ॐ महोग्रवपुष्यै स्वाहा

ॐ वार्तायै स्वाहा

ॐ वामाचारप्रियायै स्वाहा

ॐ सिरायै स्वाहा

ॐ सुधामय्यै स्वाहा

ॐ वेणुकरायै स्वाहा

ॐ वैरहायै स्वाहा

ॐ वामसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ वारमध्यस्थितायै स्वाहा

ॐ वामायै स्वाहा

ॐ वामनेत्रायै स्वाहा

ॐ शशिप्रभायै स्वाहा

ॐ शर्मदायै स्वाहा

ॐ शाङ्कर्यै स्वाहा

ॐ सीतायै स्वाहा

ॐ रवीन्दुशिखि-
लोचनायै स्वाहा

ॐ मदिरायै स्वाहा

ॐ वारुण्यै स्वाहा

ॐ वीणायै स्वाहा

ॐ गीतज्ञायै स्वाहा

ॐ मदिरावत्यै स्वाहा

ॐ वटस्थायै स्वाहा

ॐ वारुण्यै स्वाहा

ॐ सूक्तये स्वाहा

ॐ वटुजायै स्वाहा

ॐ वटुवासिन्यै स्वाहा

ॐ वटुक्यै स्वाहा

ॐ वीरसुवे स्वाहा

ॐ वन्ध्यायै स्वाहा

ॐ स्तम्भिन्यै स्वाहा

ॐ मोहिन्यै स्वाहा

ॐ चम्वै स्वाहा

ॐ मुद्गराङ्कुशहस्तायै स्वाहा
ॐ ईडच्चयायै स्वाहा
ॐ वराभयकरायै स्वाहा
ॐ कुटच्यै स्वाहा
ॐ पाटीरद्रुमवल्ल्यै स्वाहा
ॐ वटिकायै स्वाहा
ॐ वटुकेश्वर्यै स्वाहा
ॐ इष्टदायै स्वाहा
ॐ कृषिभुवे स्वाहा
ॐ कीटच्यै स्वाहा
ॐ रेवतीरमणप्रियायै स्वाहा
ॐ रोहिण्यै स्वाहा
ॐ रेवत्यै स्वाहा
ॐ रम्यायै स्वाहा

ॐ रमणायै स्वाहा

ॐ रोमहर्षिण्यै स्वाहा

ॐ रसोल्लासायै स्वाहा

ॐ रसासारायै स्वाहा

ॐ सारिण्यै स्वाहा

ॐ तारिण्यै स्वाहा

ॐ तडिते स्वाहा

ॐ तर्यै स्वाहा

ॐ अरित्रहस्तायै स्वाहा

ॐ तोतुलायै स्वाहा

ॐ तरणिप्रभायै स्वाहा

ॐ रत्नाकरप्रियायै स्वाहा

ॐ रम्भायै स्वाहा

ॐ रत्नालङ्कार

ॐ शोभितायै स्वाहा

ॐ रुक्माङ्गदायै स्वाहा

ॐ गदाहस्तायै स्वाहा

ॐ गदाधरवरप्रदायै स्वाहा

ॐ षड्रसायै स्वाहा

ॐ द्विरसायै स्वाहा

ॐ मालायै स्वाहा

ॐ मालाभरण
भूषितायै स्वाहा

ॐ मालत्यै स्वाहा

ॐ मल्लिकामोदायै स्वाहा

ॐ मोदकाहार
वल्लभायै स्वाहा

ॐ वल्लयै स्वाहा

ॐ मधुरायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ मायायै स्वाहा २००

ॐ काश्यै स्वाहा

ॐ काञ्च्यै स्वाहा

ॐ अवन्तिकायै स्वाहा

ॐ हसन्तिकायै स्वाहा

ॐ हसन्त्यै स्वाहा

ॐ भ्रामर्यै स्वाहा

ॐ वसन्तिकायै स्वाहा

ॐ क्षेमायै स्वाहा

ॐ क्षेमङ्कर्यै स्वाहा

ॐ क्षामायै स्वाहा

ॐ क्षौमवस्त्रायै स्वाहा

ॐ क्षणेश्वर्यै स्वाहा

ॐ क्षणदायै स्वाहा

ॐ क्षेमदायै स्वाहा

ॐ सीरायै स्वाहा

ॐ सीरपाणि-

समर्चितायै स्वाहा

ॐ क्रीतायै स्वाहा

ॐ क्रीतातपायै स्वाहा

ॐ क्रूरायै स्वाहा

ॐ कमनीयायै स्वाहा

ॐ कुलेश्वर्यै स्वाहा

ॐ कूर्चबीजायै स्वाहा

ॐ कुठाराढ्यायै स्वाहा

ॐ कूर्मिण्यै स्वाहा

ॐ कूर्मसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ कारुण्यायै स्वाहा

ॐ काश्मीर्यै स्वाहा

ॐ दूत्यै स्वाहा

ॐ द्वारवत्यै स्वाहा

ॐ ध्रुवायै स्वाहा

ॐ ध्रुवस्तुतायै स्वाहा

ॐ ध्रुवगतये स्वाहा

ॐ पीठेश्यै स्वाहा

ॐ बगलामुख्यै स्वाहा

ॐ सुमुख्यै स्वाहा

ॐ शोभनायै स्वाहा

ॐ अनेकरत्नायै स्वाहा

ॐ ज्वालामुख्यै स्वाहा

ॐ नुतये स्वाहा

ॐ अलकायै स्वाहा

ॐ उज्जयिन्यै स्वाहा

ॐ भोग्यायै स्वाहा

ॐ भंग्यायै स्वाहा

ॐ भोगवत्यै स्वाहा

ॐ बलायै स्वाहा

ॐ धर्मराज,पुर्यै स्वाहा

ॐ पूर्णायै स्वाहा

ॐ पूर्ण,सत्वायै स्वाहा

ॐ अमरावत्यै स्वाहा

ॐ अयोध्यायै स्वाहा

ॐ योधिनीयायै स्वाहा

ॐ युगमात्रे स्वाहा

ॐ यक्षिण्यै स्वाहा

ॐ यज्ञेश्वर्यै स्वाहा

ॐ योगगम्यायै स्वाहा

ॐ योगिध्येयायै स्वाहा

ॐ यशस्विन्यै स्वाहा

ॐ यशोवत्यै स्वाहा

ॐ शोभाङ्ग्यै स्वाहा

ॐ चारुहासायै स्वाहा

ॐ चलाचलायै स्वाहा

ॐ हरेश्वर्यै स्वाहा

ॐ हरेर्मायायै स्वाहा

ॐ मायिन्यै स्वाहा

ॐ वायुवेगिन्यै स्वाहा

ॐ अम्बालिकायै स्वाहा

ॐ अम्बायै स्वाहा

ॐ भर्गेश्यै स्वाहा

ॐ भृगुकूटायै स्वाहा

ॐ महामतये स्वाहा

ॐ कोशेश्वर्यै स्वाहा

ॐ कमलायै स्वाहा

ॐ कीर्तिदायै स्वाहा

ॐ कीर्तिवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ कठोरवाचे स्वाहा

ॐ कुहूमूर्तये स्वाहा

ॐ चन्द्रबिम्ब-
समाननायै स्वाहा

ॐ चन्द्रकुङ्कुम
लिप्ताङ्ग्यै स्वाहा

ॐ कनकाचल-
वासिन्यै स्वाहा
ॐ मलयाचल-
सानुस्थायै स्वाहा
ॐ हिमाद्रितनयायै स्वाहा
ॐ तन्वे स्वाहा
ॐ हिमाद्रिकुक्षि
देशस्थायै स्वाहा
ॐ कुब्जिकायै स्वाहा
ॐ कोसलेश्वर्यै स्वाहा
ॐ कारैकनिगडायै स्वाहा
ॐ गूढायै स्वाहा
ॐ गूढगुल्फायै स्वाहा
ॐ अतिगोपितायै स्वाहा

ॐ तनुजायै स्वाहा

ॐ तनुरूपायै स्वाहा

ॐ चापबाणधरायै स्वाहा

ॐ नुतये स्वाहा

ॐ धुरीणायै स्वाहा

ॐ धूम्रवाराह्यै स्वाहा

ॐ धूम्रकेशायै स्वाहा

ॐ अरुणाननायै स्वाहा

ॐ अरुणेश्यै स्वाहा

ॐ रतये स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ स्वात्यै स्वाहा ३००

ॐ गरिष्ठायै स्वाहा

ॐ गरीयस्यै स्वाहा

ॐ महानस्यै स्वाहा

ॐ महाकारायै स्वाहा

ॐ सुरासुरभयङ्कर्यै स्वाहा

ॐ अणुरूपायै स्वाहा

ॐ बृहज्ज्योतिषे स्वाहा

ॐ अनिरुद्धायै स्वाहा

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा

ॐ श्यामायै स्वाहा

ॐ श्याममुख्यै स्वाहा

ॐ शान्तायै स्वाहा

ॐ शान्तसन्ताप-
हारिण्यै स्वाहा

ॐ गवे स्वाहा

ॐ गुण्यायै स्वाहा

ॐ गोमख्यै स्वाहा

ॐ गुह्यायै स्वाहा

ॐ गोमत्यै स्वाहा

ॐ गुरुवाचे स्वाहा

ॐ गतये स्वाहा

ॐ गीतसन्तोष-

संसक्तायै स्वाहा

ॐ ग्राहिण्यै स्वाहा

ॐ ग्रहिण्यै स्वाहा

ॐ गुहायै स्वाहा

ॐ गणप्रियायै स्वाहा

ॐ गजगतये स्वाहा

ॐ गान्धार्यै स्वाहा

ॐ गन्धमोदिन्यै स्वाहा

ॐ गन्धमादन-

सानुस्थायै स्वाहा

ॐ सह्याचलकृतालयायै स्वाहा

ॐ गजाननप्रियायै स्वाहा

ॐ गव्यायै स्वाहा

ॐ ग्रामिकायै स्वाहा

ॐ ग्राहवाहनायै स्वाहा

ॐ गृहप्रस्वै स्वाहा

ॐ गुहावासायै स्वाहा

ॐ ग्रहमाला-

विभूषणायै स्वाहा

ॐ कावीर्यै स्वाहा

ॐ कुहकभ्रान्त्यै स्वाहा

ॐ तर्कविद्यायै स्वाहा

ॐ प्रियङ्कर्यै स्वाहा

ॐ पीताम्बरायै स्वाहा

ॐ पटाकारायै स्वाहा

ॐ पताकायै स्वाहा

ॐ सृष्टिदायै स्वाहा

ॐ सुधायै स्वाहा

ॐ दाक्षायण्यै स्वाहा

ॐ दक्षसुतायै स्वाहा

ॐ दक्षयज्ञविनाशिन्यै स्वाहा

ॐ ताराचक्रस्थितायै स्वाहा

ॐ तारायै स्वाहा

ॐ तुर्यै स्वाहा

ॐ तुर्यायै स्वाहा

ॐ तुटये स्वाहा

ॐ तुलायै स्वाहा

ॐ सन्ध्या,त्रय्यै स्वाहा

ॐ सन्धि,जरायै स्वाहा

ॐ सन्ध्यायै स्वाहा

ॐ तारण्य,ललितायै स्वाहा

ॐ ललितायै स्वाहा

ॐ लोहितायै स्वाहा

ॐ लुम्पायै स्वाहा

ॐ चम्पायै स्वाहा

ॐ कम्पायै स्वाहा

ॐ कुणसृणये स्वाहा

ॐ सृतये स्वाहा

ॐ सत्यवत्यै स्वाहा

ॐ स्वस्थायै स्वाहा

ॐ समानायै स्वाहा

ॐ मानवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ मनोमय्यै स्वाहा

ॐ मनस्तुष्ट्यै स्वाहा

ॐ कामधेनवे स्वाहा

ॐ सनातन्यै स्वाहा

ॐ सूक्ष्मरूपायै स्वाहा

ॐ सूक्ष्ममुख्यै स्वाहा

ॐ स्थूलरूपायै स्वाहा

ॐ कलावत्यै स्वाहा

ॐ तलातलाश्रयायै स्वाहा

ॐ सिन्धवे स्वाहा

ॐ त्र्यम्बिकायै स्वाहा

ॐ लम्बिकायै स्वाहा

ॐ जयायै स्वाहा

ॐ सौदामिन्यै स्वाहा

ॐ महादेव्यै स्वाहा

ॐ सनकर्षि-

समर्चितायै स्वाहा

ॐ मन्दाकिन्यै स्वाहा

ॐ यमुनायै स्वाहा

ॐ विपाशायै स्वाहा

ॐ नर्मदानद्यै स्वाहा

ॐ गण्डक्यै स्वाहा

ॐ इरावत्यै स्वाहा

ॐ सिप्रायै स्वाहा

ॐ वितस्तायै स्वाहा

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा

ॐ रेवायै स्वाहा

ॐ ऐरावत्यै स्वाहा

ॐ इक्षुमत्यै स्वाहा

ॐ सागरवासिन्यै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ देवक्यै स्वाहा[४००]

ॐ देवमात्रे स्वाहा

ॐ देवेश्यै स्वाहा

ॐ देवसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ दैत्यघ्न्यै स्वाहा

ॐ दमन्यै स्वाहा

ॐ दात्रे स्वाहा

ॐ दित्यै स्वाहा

ॐ दितिजसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ विद्याधर्यै स्वाहा

ॐ विद्येश्यै स्वाहा

ॐ विद्याधरजसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ मेनकायै स्वाहा

ॐ चित्रलेखायै स्वाहा

ॐ चित्रिण्यै स्वाहा

ॐ तिलोत्तमायै स्वाहा

ॐ उर्वश्यै स्वाहा

ॐ मोहिन्यै स्वाहा

ॐ रम्भायै स्वाहा

ॐ अप्सरोगणसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ यक्षिण्यै स्वाहा

ॐ यक्षलोकेश्यै स्वाहा

ॐ नरवाहनपूजितायै स्वाहा

ॐ यक्षेन्द्रतनयायै स्वाहा

ॐ योग्यायै स्वाहा

ॐ यक्षनायकसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ मन्दोदर्यै स्वाहा

ॐ करालाक्ष्यै स्वाहा

ॐ मेघनादवरप्रदायै स्वाहा

ॐ मेघवाहनसन्तुष्टायै स्वाहा

ॐ मेघमूर्तये स्वाहा

ॐ राक्षस्यै स्वाहा

ॐ रक्षोहर्त्रे स्वाहा

ॐ केकस्यै स्वाहा

ॐ रक्षोनायकसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ किन्नर्यै स्वाहा

ॐ कम्बुकण्ठ्यै स्वाहा

ॐ कलकण्ठसुनायै स्वाहा

ॐ स्वधायै स्वाहा

ॐ किंमुख्यै स्वाहा

ॐ हयवक्त्रायै स्वाहा

ॐ केलायै स्वाहा

ॐ किन्नरीसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ पिशाच्यै स्वाहा

ॐ राजमातङ्‌ग्यै स्वाहा

ॐ उच्छिष्टपद-

संस्थितायै स्वाहा

ॐ महापिशाचिन्यै स्वाहा

ॐ चान्द्र्यै स्वाहा

ॐ पिशाचकुलसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ गुह्येश्वर्यै स्वाहा

ॐ गुह्यरूपायै स्वाहा

ॐ गुर्व्यै स्वाहा

ॐ गुह्यकसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ सिद्धिप्रदायै स्वाहा

ॐ सिद्धवध्व्यै स्वाहा

ॐ सिद्धेश्यै स्वाहा

ॐ सिद्धसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ भूतेश्वर्यै स्वाहा

ॐ भूतलयायै स्वाहा

ॐ भूतधात्र्यै स्वाहा

ॐ भयापहायै स्वाहा

ॐ भूतभीतिहर्यै स्वाहा

ॐ भव्यायै स्वाहा

ॐ भूतजायै स्वाहा

ॐ भूतसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ पृथ्व्यै स्वाहा

ॐ पार्थिवलोकेश्यै स्वाहा

ॐ पृथायै स्वाहा

ॐ विष्णुसमर्चितायै स्वाहा

ॐ वसुन्धरायै स्वाहा

ॐ वसुनतायै स्वाहा

ॐ पृथिव्यै स्वाहा

ॐ भूमिसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ अम्भोधितनयायै स्वाहा

ॐ लुप्तायै स्वाहा

ॐ जलजाक्ष्यै स्वाहा

ॐ जलेश्वर्यै स्वाहा

ॐ अमूर्तये स्वाहा

ॐ अम्मय्यै स्वाहा

ॐ मार्यै स्वाहा

ॐ जलस्थायै स्वाहा

ॐ जलसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ तेजस्विन्यै स्वाहा

ॐ महोधात्र्यै स्वाहा

ॐ तेजस्व्यै स्वाहा

ॐ सूर्यबिम्बग्रायै स्वाहा

ॐ सूर्यकान्तये स्वाहा

ॐ सूर्यतेजसे स्वाहा

ॐ तेजोरूपायै स्वाहा

ॐ एकसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ वायुवाहायै स्वाहा

ॐ वायुमुख्यै स्वाहा

ॐ वायुलोकैकसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ गगनस्थायै स्वाहा

ॐ देवचरिण्यै स्वाहा

ॐ शून्यरूपायै स्वाहा

ॐ निराकृतये स्वाहा

ॐ निराभासायै स्वाहा

ॐ भासमानायै स्वाहा

ॐ द्युतये स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ आकाशसुन्दर्यै स्वाहा ५००

ॐ क्षितिमूर्तिधरायै स्वाहा

ॐ अनन्तायै स्वाहा

ॐ क्षितिभृते स्वाहा

ॐ लोकसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ अब्धियानायै स्वाहा

ॐ रत्नशोभायै स्वाहा

ॐ वारुणेश्यै स्वाहा

ॐ वरायुधायै स्वाहा

ॐ पाशहस्तायै स्वाहा

ॐ पोषणायै स्वाहा

ॐ वरुणेश्वरसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ अतिलोकरुचये स्वाहा

ॐ ज्यातिषे स्वाहा

ॐ पञ्चाननकृतस्थितये स्वाहा

ॐ प्राणापान-

समानेशायै स्वाहा

ॐ उदानव्यानरूपिण्यै स्वाहा
ॐ पञ्चवातगतये स्वाहा
ॐ नाडीरूपिण्यै स्वाहा
ॐ वातसुन्दर्यै स्वाहा
ॐ अग्निरूपायै स्वाहा
ॐ वह्निशिखायै स्वाहा
ॐ वाडवानल-
सन्निभायै स्वाहा
ॐ हेतये स्वाहा
ॐ हव्यहृतज्ज्योतिषे स्वाहा
ॐ अग्निजायै स्वाहा
ॐ वह्निसुन्दर्यै स्वाहा
ॐ सोमेश्वर्यै स्वाहा
ॐ सोमकलायै स्वाहा

ॐ सोमपान-
परायणायै स्वाहा
ॐ सौम्याननायै स्वाहा
ॐ सौम्यरूपायै स्वाहा
ॐ सोमस्थायै स्वाहा
ॐ सोमसुन्दर्यै स्वाहा
ॐ सूर्यप्रभायै स्वाहा
ॐ सूर्यमुख्यै स्वाहा
ॐ सूर्यजायै स्वाहा
ॐ सूर्यसुन्दर्यै स्वाहा
ॐ याज्ञिक्यै स्वाहा
ॐ यज्ञभागेच्छायै स्वाहा
ॐ यजमानवरप्रदायै स्वाहा
ॐ याजक्यै स्वाहा

ॐ यज्ञविद्यायै स्वाहा

ॐ यजमानैकसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ आकाशगामिन्यै स्वाहा

ॐ वन्द्यायै स्वाहा

ॐ शब्दजायै स्वाहा

ॐ आकाशसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ मीनप्रियायै स्वाहा

ॐ मीननेत्रायै स्वाहा

ॐ मीनेशायै स्वाहा

ॐ मीनसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ कूर्मपृष्ठगतायै स्वाहा

ॐ कूर्म्यै स्वाहा

ॐ कूर्मजायै स्वाहा

ॐ कूर्मरूपिण्यै स्वाहा

ॐ वाराह्यै स्वाहा
ॐ वीरस्वै स्वाहा
ॐ वह्यायै स्वाहा
ॐ वरारोहायै स्वाहा
ॐ मृगेक्षणायै स्वाहा
ॐ वराहमूर्त्तये स्वाहा
ॐ वाचालायै स्वाहा
ॐ दंष्ट्रायै स्वाहा
ॐ वाराहसुन्दर्यै स्वाहा
ॐ नारसिंहाकृतये स्वाहा
ॐ देव्यै स्वाहा
ॐ दुष्टदैत्यनिषूदनायै स्वाहा
ॐ प्रद्युम्नवरदायै स्वाहा
ॐ नार्यै स्वाहा

ॐ नारसिंहैकसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ वामजायै स्वाहा

ॐ वामनायै स्वाहा

ॐ कारायै स्वाहा

ॐ नारायणपरा-

यणायै स्वाहा

ॐ बलिदानवदर्पघ्न्यै स्वाहा

ॐ वामायै स्वाहा

ॐ वामनसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ रामप्रियायै स्वाहा

ॐ रामकीलायै स्वाहा

ॐ क्षत्रवंशक्षयङ्कर्यै स्वाहा

ॐ धनपुत्र्यै स्वाहा

ॐ राजकन्यायै स्वाहा

ॐ रामायै स्वाहा

ॐ परशुधारिण्यै स्वाहा

ॐ भार्गव्यै स्वाहा

ॐ भार्गवेष्टायै स्वाहा

ॐ जमदग्नि-
वरप्रदायै स्वाहा

ॐ कुठारधारिण्यै स्वाहा

ॐ रात्र्यै स्वाहा

ॐ जामदग्न्यैकसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ सीतायै स्वाहा

ॐ लक्ष्मणसेव्यायै स्वाहा

ॐ रक्षःकुलविनाशिन्यै स्वाहा

ॐ रामप्रियायै स्वाहा

ॐ शत्रुघ्न्यै स्वाहा

ॐ शत्रुघ्नभरतेष्टदायै स्वाहा

ॐ लावण्यामृत-
धाराढ्यायै स्वाहा

ॐ लवणासुरघातिन्यै स्वाहा

ॐ लोहितास्यायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ प्रसन्नास्यायै स्वाहा ६००

ॐ सुरामायै स्वाहा

ॐ रामसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ कृष्णकेशायै स्वाहा

ॐ कृष्णमुख्यै स्वाहा

ॐ यादवान्तकर्यै स्वाहा

ॐ लयायै स्वाहा

ॐ यादोगणार्चितायै स्वाहा

ॐ योग्यायै स्वाहा

ॐ राधायै स्वाहा

ॐ श्रीकृष्णसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ बुद्धप्रस्वै स्वाहा

ॐ बुद्धदेव्यै स्वाहा

ॐ जिनमार्गपरायणायै स्वाहा

ॐ जितक्रोधायै स्वाहा

ॐ जितालस्यायै स्वाहा

ॐ जिनसेव्यायै स्वाहा

ॐ जितेन्द्रियायै स्वाहा

ॐ जिनवंशधरायै स्वाहा

ॐ उग्रायै स्वाहा

ॐ नीलान्तायै स्वाहा

ॐ बुद्धसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ काल्यै स्वाहा

ॐ कोलाहलप्रीतायै स्वाहा

ॐ प्रेतवाहायै स्वाहा

ॐ पुरीश्वर्यै स्वाहा

ॐ कल्किप्रियायै स्वाहा

ॐ कम्बुधरायै स्वाहा

ॐ कलिकालैकसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ विष्णुमायायै स्वाहा

ॐ ब्रह्ममायायै स्वाहा

ॐ शाम्भव्यै स्वाहा

ॐ शववाहनायै स्वाहा

ॐ इन्द्रावरज-

वक्षःस्थायै स्वाहा

ॐ स्थाणुपत्न्यै स्वाहा

ॐ पलालिन्यै स्वाहा

ॐ जृम्भिन्यै स्वाहा

ॐ जृम्भहर्त्र्यै स्वाहा

ॐ लम्बमानकचाकुलायै-
स्वाहा

ॐ कुलाकुलप्रदेशान्यै स्वाहा

ॐ पदद्दानफलप्रदायै स्वाहा

ॐ कुलवागीश्वर्यै स्वाहा

ॐ कुल्यायै स्वाहा

ॐ कुलजायै स्वाहा

ॐ कुलसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ पुरन्दरेष्टायै स्वाहा

ॐ कारुण्यालयायै स्वाहा

ॐ पुण्यजनेश्वर्यै स्वाहा

ॐ पुण्योत्साहायै स्वाहा

ॐ पापहर्त्र्यै स्वाहा

ॐ पाकशासनसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ सूर्यकोटिप्रती-
काशायै स्वाहा

ॐ सूर्यतेजोमय्यै स्वाहा

ॐ मष्यै स्वाहा

ॐ लेखन्यै स्वाहा

ॐ भ्राजितायै स्वाहा

ॐ रज्जुरूपिण्यै स्वाहा

ॐ सूर्यसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ चन्द्रिकायै स्वाहा

ॐ सुधाधारायै स्वाहा

ॐ ज्योत्स्नायै स्वाहा

ॐ शीतांशुसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ लोलाक्ष्यै स्वाहा

ॐ शताक्ष्यै स्वाहा

ॐ सहस्त्राक्ष्यै स्वाहा

ॐ सहस्त्रपादे स्वाहा

ॐ सहस्त्रशीर्षायै स्वाहा

ॐ चन्द्राक्ष्यै स्वाहा

ॐ सहस्त्रभुजवल्लिकायै स्वाहा

ॐ कोटिरत्नां-

शुशोभाढ्यायै स्वाहा

ॐ शुभ्रवस्त्रायै स्वाहा

ॐ शताननायै स्वाहा

ॐ शतानन्दायै स्वाहा

ॐ श्रुतिधरायै स्वाहा

ॐ पिङ्गलायै स्वाहा

ॐ इडायै स्वाहा

ॐ उग्रनादिन्यै स्वाहा

ॐ सुषुम्णायै स्वाहा

ॐ हारकेयूरनूपुरारव,
संकुलायै स्वाहा

ॐ घोरनादायै स्वाहा

ॐ घोरमुख्यै स्वाहा

ॐ उन्मुख्यै स्वाहा

ॐ उल्मुकायुधायै स्वाहा

ॐ गोपितायै स्वाहा

ॐ गूर्जर्यै स्वाहा

ॐ गाथायै स्वाहा

ॐ गायत्र्यै स्वाहा

ॐ वेद्वल्लभायै स्वाहा

ॐ वल्लक्यै स्वाहा

ॐ सुरनादायै स्वाहा

ॐ नाद्विद्यायै स्वाहा

ॐ नदीतटच्यै स्वाहा

ॐ बिन्दुरूपायै स्वाहा

ॐ चक्रयोनये स्वाहा

ॐ बिन्दुनाद्स्वरूपिण्यै

ॐ चक्रेश्वर्यै स्वाहा

ॐ भैरवेश्यै स्वाहा

ॐ महाभैरव्वल्लभायै स्वाहा

ॐ कालभैरव्वल्लयायै स्वाहा

ॐ कल्पान्त्रङ्ग्नर्तक्यै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ प्रलयानल,
धूम्राभायै स्वाहा७००

ॐ योनिमध्य,
कृतालयायै स्वाहा
ॐ भूचरी,खेचरी,मुद्रायै स्वाहा
ॐ नवमुद्रा,विलासिन्यै स्वाहा
ॐ वियोगिन्यै स्वाहा
ॐ श्मशान,स्थायै स्वाहा
ॐ श्मशानार्चन,
तोषितायै स्वाहा
ॐ भास्वराङ्ग्यै स्वाहा
ॐ भर्ग,शिखायै स्वाहा

ॐ भर्गवामाङ्गवासिन्यै स्वाहा

ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा

ॐ विश्वकाल्यै स्वाहा

ॐ श्रीकाल्यै स्वाहा

ॐ मेघकालिकायै स्वाहा

ॐ नीलकाल्यै स्वाहा

ॐ कालरात्र्यै स्वाहा

ॐ काल्यै स्वाहा

ॐ कामेशकालिकायै स्वाहा

ॐ इन्द्रकाल्यै स्वाहा

ॐ पूर्वकाल्यै स्वाहा

ॐ पश्चिमाम्नाय-

कालिकायै स्वाहा

ॐ श्मशान-

कालिकायै स्वाहा

ॐ श्रीं, ह्रीं काल्यै स्वाहा

ॐ श्री-कृष्ण,कालिकायै स्वाहा

ॐ क्लीं कारो,त्तरकाल्यै स्वाहा

ॐ श्रींहुंह्रींदक्षिण-

कालिकायै स्वाहा

ॐ सुन्दर्यै स्वाहा

ॐ त्रिपुरेशान्यै स्वाहा

ॐ त्रिकूटायै स्वाहा

ॐ त्रिपुरा,र्चितायै स्वाहा

ॐ त्रिनेत्रायै स्वाहा

ॐ त्रिपुरा,ध्यक्षायै स्वाहा

ॐ त्रिपुटायै स्वाहा

ॐ पुट,भैरव्यै स्वाहा

ॐ त्रिलोक,जनन्यै स्वाहा

ॐ त्रेतायै स्वाहा

ॐ महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ कामेश्वर्यै स्वाहा

ॐ कामकलायै स्वाहा

ॐ कालकामेशसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ द्व्यक्षर्यै स्वाहा

ॐ त्र्यक्षरीदेव्यै स्वाहा

ॐ भावनायै स्वाहा

ॐ भुवनेश्वर्यै स्वाहा

ॐ एकाक्षर्यै स्वाहा

ॐ चतुष्कूटायै स्वाहा

ॐ त्रिकूटेश्यै स्वाहा

ॐ लयेश्वर्यै स्वाहा

ॐ चतुर्वर्णायै स्वाहा

ॐ चतुर्वेश्यै स्वाहा

ॐ वर्णाढ्यायै स्वाहा

ॐ चतुरक्षर्यै स्वाहा

ॐ पञ्चाक्षर्यै स्वाहा

ॐ षड्वक्त्रायै स्वाहा

ॐ षट्कूटायै स्वाहा

ॐ षडक्षर्यै स्वाहा

ॐ सप्ताक्षर्यै स्वाहा

ॐ नवीनीव्यै स्वाहा

ॐ परमाष्टा-
क्षरीश्वर्यै स्वाहा

ॐ नवम्यै स्वाहा

ॐ पञ्चम्यै स्वाहा

ॐ षष्ठ्यै स्वाहा

ॐ नागेश्यै स्वाहा

ॐ नवाक्षर्यै स्वाहा

ॐ दशाक्षर्यै स्वाहा

ॐ दशास्यै स्वाहा

ॐ देविकायै स्वाहा

ॐ एकादशाक्षर्यै स्वाहा

ॐ द्वादशादित्य-
सङ्काशायै स्वाहा

ॐ द्वादश्यै स्वाहा

ॐ द्वादशाक्षर्यै स्वाहा

ॐ त्रयोदश्यै स्वाहा

ॐ वेदगर्भायै स्वाहा

ॐ वाद्यायै स्वाहा

ॐ त्रयोदशाक्षर्यै स्वाहा

ॐ चतुर्दशाक्षरी-

विद्यायै स्वाहा

ॐ पञ्चदशाक्षरी-

विद्यायै स्वाहा

ॐ षोडशीविद्यायै स्वाहा

ॐ सर्वविद्येश्यै स्वाहा

ॐ महाश्रीषोडशाक्षर्यै स्वाहा

ॐ महाश्रीषोडशी-

विद्यायै स्वाहा

ॐ चिन्तामणि-

मनुप्रियायै स्वाहा

ॐ द्वाविंशत्यक्षर्यै स्वाहा

ॐ श्यामायै स्वाहा

ॐ महाकाल-

कुटुम्बिन्यै स्वाहा

ॐ वज्रतारायै स्वाहा

ॐ कालतारायै स्वाहा

ॐ नारीतारायै स्वाहा

ॐ उग्रतारिण्यै स्वाहा

ॐ कामतारायै स्वाहा

ॐ शब्दतारायै स्वाहा

ॐ शब्दतारारसा-

श्रयायै स्वाहा

ॐ रूपतारायै स्वाहा

ॐ गन्धतारायै स्वाहा

ॐ महानीलायै स्वाहा

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा

ॐ काम्ज्वालायै स्वाहा

ॐ वह्निज्वालायै स्वाहा

ॐ ब्रह्मज्वालायै स्वाहा

ॐ जटाकुलायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ विष्णु्ज्वालायै स्वाहा ८००

ॐ जिष्णुशिखायै स्वाहा

ॐ भद्रज्वालायै स्वाहा

ॐ करालिन्यै स्वाहा

ॐ विकराल्मुखीदेव्यै स्वाहा

ॐ कराल्यै स्वाहा

ॐ भूतिभूषणायै स्वाहा

ॐ चितायै स्वाहा

ॐ शवासनायै स्वाहा

ॐ चिन्तायै स्वाहा

ॐ चिन्तामण्डल-

मध्यगायै स्वाहा

ॐ भूतभैरवसेव्यायै स्वाहा

ॐ भूतभैरवपालिन्यै स्वाहा

ॐ बन्धक्यै स्वाहा

ॐ बद्धसम्बन्धायै स्वाहा

ॐ भवबन्धविनाशिन्यै स्वाहा

ॐ भवान्यै स्वाहा

ॐ देवदेवेश्यै स्वाहा

ॐ दीक्षायै स्वाहा

ॐ दीक्षितपूजितायै स्वाहा

ॐ साधकेश्यै स्वाहा

ॐ सिद्धिदात्र्यै स्वाहा

ॐ साधकानन्दवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ साधकाश्रयभूतायै स्वाहा

ॐ साधकेष्टफल

प्रदायै स्वाहा

ॐ रजोवत्यै स्वाहा

ॐ राजस्यै स्वाहा

ॐ रजक्यै स्वाहा

ॐ रजस्वलायै स्वाहा

ॐ पुष्पप्रियायै स्वाहा

ॐ पुष्पवत्यै स्वाहा

ॐ स्वयम्भुवे स्वाहा

ॐ पुष्पमालिकायै स्वाहा

ॐ स्वयम्भूपुष्प-

गन्धाढ्यायै स्वाहा

ॐ पुलस्त्यसुतघातिन्यै स्वाहा

ॐ पात्रहस्तायै स्वाहा

ॐ सुरापात्रार्पिता-
शायै स्वाहा

ॐ पीतभूषणायै स्वाहा

ॐ पिङ्गाननायै स्वाहा

ॐ पिङ्गकेश्यै स्वाहा

ॐ पिङ्गलायै स्वाहा

ॐ पिङ्गलेश्वर्यै स्वाहा

ॐ मङ्गलायै स्वाहा

ॐ मङ्गलेशान्यै स्वाहा

ॐ सर्वमङ्गलमङ्गलायै स्वाहा

ॐ पुरूरवेश्वर्यै स्वाहा

ॐ पाशधरायै स्वाहा

ॐ चापधरायै स्वाहा

ॐ अध्वरायै स्वाहा

ॐ पुण्यधात्र्यै स्वाहा

ॐ पुण्यमय्यै स्वाहा

ॐ पुण्यलोकनिवासिन्यै स्वाहा

ॐ होतृसेव्यायै स्वाहा

ॐ हकारस्थायै स्वाहा

ॐ मकारस्थायै स्वाहा

ॐ सुखावहायै स्वाहा

ॐ सुख्यै स्वाहा

ॐ शोभावत्यै स्वाहा

ॐ सत्यायै स्वाहा

ॐ सत्याचारपरा-
यणायै स्वाहा

ॐ सत्यार्चनायै स्वाहा

ॐ कुलेशान्यै स्वाहा

ॐ वामदेवकला-
श्रयायै स्वाहा

ॐ सद्यो‚जातकला‚देव्यै स्वाहा

ॐ शिवायै स्वाहा

ॐ घोरकला‚कृत्यै स्वाहा

ॐ शर्वर्यै स्वाहा

ॐ क्षीरसदृश्यै स्वाहा

ॐ क्षीर‚नीर‚विवेकिन्यै स्वाहा

ॐ वितर्क‚निलयायै स्वाहा

ॐ नित्यायै स्वाहा

ॐ नित्य‚क्लिन्नायै स्वाहा

ॐ पराम्बिकायै स्वाहा

ॐ पुरारिदयितायै स्वाहा

ॐ दीर्घायै स्वाहा

ॐ दीर्घनासायै स्वाहा

ॐ अल्पभाषिण्यै स्वाहा

ॐ काशिकायै स्वाहा

ॐ कौशिक्यै स्वाहा

ॐ कोश्यै स्वाहा

ॐ कोशदायै स्वाहा

ॐ रूपबर्धिन्यै स्वाहा

ॐ तुष्ट्यै स्वाहा

ॐ पुष्ट्यै स्वाहा

ॐ प्रजायै स्वाहा

ॐ प्रीतायै स्वाहा

ॐ पूजकायै स्वाहा

ॐ पूजकप्रियायै स्वाहा

ॐ प्रजावत्यै स्वाहा

ॐ गर्भवत्यै स्वाहा

ॐ गर्भ,पोषण-

पोषितायै स्वाहा

ॐ शुक्ल,वाससे स्वाहा

ॐ शुक्ल,रूपायै स्वाहा

ॐ शुक्ल,हासायै स्वाहा

ॐ जयावहायै स्वाहा

ॐ जानक्यै स्वाहा

ॐ जन्य,जनकायै स्वाहा

ॐ जनतोषण,तत्परायै स्वाहा

ॐ वादप्रियायै स्वाहा

ॐ वाद्य,रतायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ वन्दितायै स्वाहा[१००]

ॐ वात सुन्दर्यै

ॐ वाक्स्तम्भिन्यै स्वाहा

ॐ कीरवाण्यै स्वाहा

ॐ धीरायै स्वाहा

ॐ धीरधुरन्धर्यै स्वाहा

ॐ स्तनन्धय्यै स्वाहा

ॐ सामिधेन्यै स्वाहा

ॐ निरानन्दायै स्वाहा

ॐ निरामयायै स्वाहा

ॐ समस्तसुखदायै स्वाहा

ॐ शार्यै स्वाहा

ॐ वारांनिधिवर-
प्रदायै स्वाहा

ॐ वालुक्यै स्वाहा

ॐ वीरपानेष्टायै स्वाहा

ॐ वसुदात्र्यै स्वाहा

ॐ वसुप्रियायै स्वाहा

ॐ शुक्रानन्दायै स्वाहा

ॐ शुक्ररसायै स्वाहा

ॐ शुक्रपूज्यायै स्वाहा

ॐ शुक्रप्रियायै स्वाहा

ॐ शुक्यै स्वाहा

ॐ शुकहस्तायै स्वाहा

ॐ समस्तनर-
कान्ताकायै स्वाहा

ॐ समस्त,तत्त्व-

निलयायै स्वाहा

ॐ भरूपायै स्वाहा

ॐ भगेश्वर्यै स्वाहा

ॐ भग,बिम्बायै स्वाहा

ॐ भगायै स्वाहा

ॐ हृद्यायै स्वाहा

ॐ भगलिङ्ग,स्वरूपिण्यै स्वाहा

ॐ भग,लिङ्गेश्वर्यै स्वाहा

ॐ श्रीदायै स्वाहा

ॐ भग,लिङ्गऽमृत-

स्त्रवायै स्वाहा

ॐ क्षीराशनायै स्वाहा

ॐ क्षीररुचये स्वाहा

ॐ आज्यपान-

परायणायै स्वाहा

ॐ मधुपानपरायै स्वाहा

ॐ प्रौढायै स्वाहा

ॐ पीवरांसायै स्वाहा

ॐ परम्परायै स्वाहा

ॐ पिलम्पिलायै स्वाहा

ॐ पटोलेशायै स्वाहा

ॐ पाटलायै स्वाहा

ॐ अरुणलोचनायै स्वाहा

ॐ क्षीराम्बुधिप्रियायै स्वाहा

ॐ क्षीवायै स्वाहा

ॐ सरलायै स्वाहा

ॐ सरलायुधायै स्वाहा

ॐ संग्रामायै स्वाहा

ॐ सुनयायै स्वाहा

ॐ स्त्रस्तायै स्वाहा

ॐ संस्तृतये स्वाहा

ॐ सनकेश्वर्यै स्वाहा

ॐ कन्यायै स्वाहा

ॐ कनकलेखायै स्वाहा

ॐ कान्यकुब्ज-
निवासिन्यै स्वाहा

ॐ काञ्चनाभतन्वै स्वाहा

ॐ काष्ठायै स्वाहा

ॐ कुष्ठरोगविनाशिन्यै स्वाहा

ॐ कठोरमूर्धजायै स्वाहा

ॐ कुन्त्यै स्वाहा

ॐ कुन्तायुधधरायै स्वाहा

ॐ धृत्यै स्वाहा

ॐ चर्माम्बरायै स्वाहा

ॐ कूरनख्यै स्वाहा

ॐ कठोराक्ष्यै स्वाहा

ॐ चतुर्भुजायै स्वाहा

ॐ चतुर्वेदप्रियायै स्वाहा

ॐ चर्यायै स्वाहा

ॐ चतुर्वर्ग-

फलप्रदायै स्वाहा

ॐ ब्रह्माण्डचारिण्यै स्वाहा

ॐ स्फूर्तये स्वाहा

ॐ ब्रह्माण्यै स्वाहा

ॐ ब्रह्मसंमितायै स्वाहा

ॐ सत्कारकारिण्यै स्वाहा

ॐ मूर्तये स्वाहा

ॐ सूतिकायै स्वाहा

ॐ लतिकायै स्वाहा

ॐ लतायै स्वाहा

ॐ कल्पवल्ल्यै स्वाहा

ॐ कृशांग्यै स्वाहा

ॐ कल्पपादप-

वासिन्यै स्वाहा

ॐ कल्पपाशायै स्वाहा

ॐ महाविद्यायै स्वाहा

ॐ विद्याराज्ञ्यै स्वाहा

ॐ सुखाश्रयायै स्वाहा

ॐ भूतराज्ञ्यै स्वाहा

ॐ विश्वराज्ञ्यै स्वाहा

ॐ लोकराज्ञ्यै स्वाहा

ॐ शिवाश्रयायै स्वाहा

ॐ ब्रह्मराज्ञ्यै स्वाहा

ॐ विष्णुराज्ञ्यै स्वाहा

ॐ रुद्रराज्ञ्यै स्वाहा

ॐ जटाश्रयायै स्वाहा

ॐ नागराज्ञ्यै स्वाहा

ॐ वंशराज्ञ्यै स्वाहा

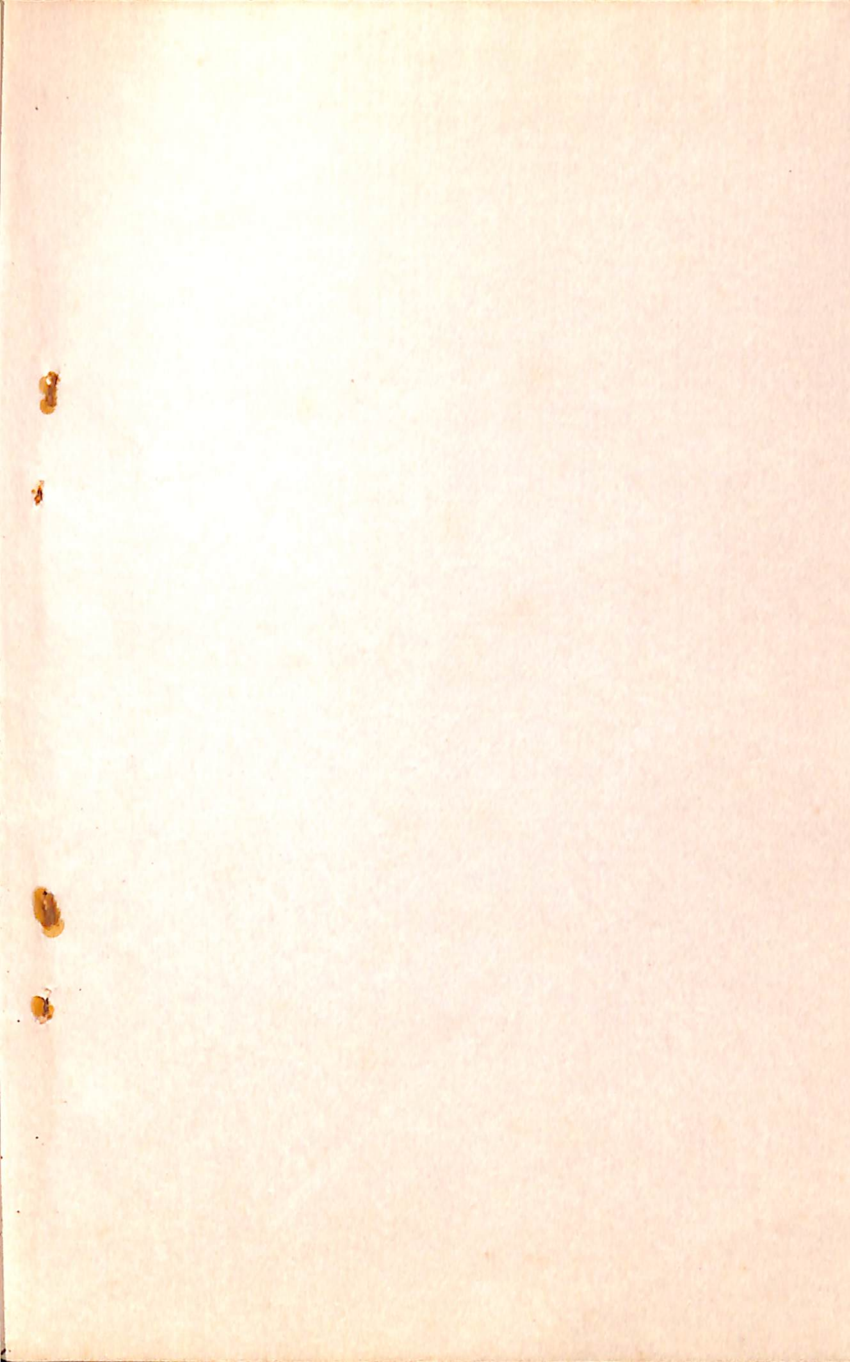
ॐ वीरराज्ञ्यै स्वाहा

ॐ रजःप्रियायै स्वाहा

ॐ सत्वराज्ञ्यै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ तमोराज्ञ्यै स्वाहा१०००



विजयेश्वर-ज्योतिष कार्यालय से छपी पुस्तकें मिलने के पते :-

1. विजयेश्वर धार्मिक पुस्तक भण्डार
   तालाब तिलो जम्मू

2. जे. के. बुक शाप
   तालाब तिलो जम्मू

3. भसीन स्टेशनरी स्टोर
   पक्का-ढंगा जम्मू

4. यूनिवर्सल निवज़ एज़न्सी
   उधमपुर - जम्मू

5. देहली में
   तनेजा एलकट्रिक्लज़ एण्ड टय्न्ट हाऊस
   रघुनाथ बाजार अमरकालोनी
   लाजपतनगर-देहली - 6429046
   शाप नं. 45 ब्रह्मपुत्र शापिंग कम्पलेक्स
   सैक्टर - 29 नयोडा - देहली